अभ्यास पत्रक

पाठ – तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. गद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"राजकपूर ने हिरामन के रूप में काम किया और वहीदा रहमान हीराबाई के रूप में सामने आईं। दोनों ही शैलेंद्र के मन में बसे पात्र थे, वे इन्हें जिस रूप में देखना चाहते थे, कलाकारों ने वैसा ही प्रस्तुत किया।"

1. राजकपूर और वहीदा रहमान ने किस भूमिका में अभिनय किया?

उत्तर - .....

.....

2. शैलेंद्र इन पात्रों को किस रूप में देखना चाहते थे?

उत्तर - .....

.....

3. कलाकारों ने किस प्रकार से शैलेंद्र की कल्पना को साकार किया?

उत्तर - .....

.....

2. Assertion-Reason आधारित प्रश्न – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** शैलेंद्र ने 'तीसरी कसम' को संजीदगी और भावना से निर्मित किया।
   कारण: वे इसे केवल व्यावसायिक दृष्टिकोण से बना रहे थे।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** 'तीसरी कसम' में लोक-संस्कृति की झलक मिलती है।
   कारण: फिल्म का कथानक फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी पर आधारित था।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है। (ग) A: सही, R: गलत
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है। (घ) A: गलत, R: सही

3. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQs) – (5x1=5 अंक)

6. 'तीसरी कसम' के संगीतकार कौन थे?
   (क) सचिन देव बर्मन (ख) शंकर-जयकिशन (ग) नौशाद (घ) लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल
7. फिल्म का मुख्य पात्र 'हिरामन' क्या करता है?
   (क) शिक्षक (ख) किसान (ग) गायक (घ) बैलगाड़ी चलाने वाला
8. शैलेंद्र किस प्रमुख साहित्यिक विधा में प्रसिद्ध थे?
   (क) कहानी (ख) उपन्यास (ग) कविता (घ) नाटक
9. लेखिका ने शैलेंद्र को क्या कहा है?
   (क) भावुक निर्देशक (ख) गीतों का रचनाकार (ग) सच्चा शिल्पकार (घ) सैल्यूलाइड का कवि
10. लेख में 'फणीश्वरनाथ रेणु' को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?
    (क) गीतकार (ख) लेखक (ग) नायक (घ) आलोचक

eGyanarchive

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. शैलेंद्र फिल्म निर्माण में भावनात्मक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति कैसे सिद्ध हुए?

उत्तर - .....

.....

.....

12. राजकपूर और वहीदा रहमान के अभिनय के संबंध में शैलेंद्र की क्या भावना थी?

उत्तर - .....

.....

.....

13. शैलेंद्र को फिल्म निर्माण में किस कारण आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. शैलेंद्र के व्यक्तित्व में रचनाकार और निर्माता दोनों की कैसी विशेषताएँ समाहित थीं? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "शैलेंद्र जैसे रचनाकारों की रचनाएँ समय से परे होकर जीवन मूल्यों को जीवंत करती हैं" – इस कथन की पुष्टि पाठ 'तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र' के आधार पर कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. राजकपूर ने हिरामन और वहीदा रहमान ने हीराबाई की भूमिका निभाई।
2. शैलेंद्र इन पात्रों को साधारण, संवेदनशील और यथार्थवादी रूप में देखना चाहते थे।
3. दोनों कलाकारों ने भावनात्मक, स्वाभाविक और सहज अभिनय से इन पात्रों को जीवंत कर दिया।
4. (ग)
5. (क)
6. (ख)
7. (घ)
8. (ग)
9. (घ)
10. (ख)
11. शैलेंद्र ने फिल्म को लाभ का साधन नहीं, बल्कि रचनात्मक संतुष्टि के माध्यम के रूप में देखा। उन्होंने प्रचार-प्रसार के स्थान पर गुणवत्ता पर ध्यान दिया।
12. शैलेंद्र का मानना था कि राजकपूर और वहीदा रहमान ने उनके मन के पात्रों को पूरी निष्ठा से निभाया और उन्हीं भावों को प्रदर्शित किया जो वह चाहते थे।
13. शैलेंद्र ने फिल्म के प्रचार, बिक्री, वितरण आदि के बारे में अधिक न सोचते हुए रचनात्मक पक्ष पर ही ध्यान केंद्रित किया, जिससे वित्तीय हानि हुई।

14. शैलेंद्र एक ओर संवेदनशील कवि थे, दूसरी ओर भावुक लेकिन निष्ठावान निर्माता भी। उन्होंने 'तीसरी कसम' में साहित्य, संगीत और दृश्यात्मकता का सुंदर समन्वय किया। उनका लक्ष्य व्यावसायिक सफलता नहीं, बल्कि एक सजीव कलात्मक कृति प्रस्तुत करना था। वे फिल्म निर्माण को पूंजी का माध्यम नहीं, बल्कि संवेदना और जीवन के अनुभवों को साझा करने की साधना मानते थे। उनके गीतों में गहराई और फिल्म में सादगी, दोनों ही उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ हैं।

15. शैलेंद्र केवल गीतकार नहीं, जीवन के गीत गाने वाला एक साधक थे। उन्होंने 'तीसरी कसम' जैसी फिल्म बनाकर सिद्ध किया कि एक रचनाकार की सबसे बड़ी संपत्ति उसकी संवेदना होती है। उन्होंने लाभ की बजाय सच्चाई को चुना। हिरामन और हीराबाई जैसे पात्रों को उन्होंने साहित्य से उठाकर सैल्यूलाइड पर जीवंत कर दिया। उनका गीत "सजनवा बैरी हो गए हमार..." हो या "पान खाए सैंया हमार..." – सबमें लोक जीवन की सादगी और भावनाओं की गहराई है। शैलेंद्र की रचनाएँ किसी युग विशेष में बँधी नहीं, बल्कि मनुष्यता, करुणा और आत्म-संवेदना जैसे शाश्वत मूल्यों को दर्शाती हैं। इसलिए वे समय से परे हैं और आज भी उतनी ही सार्थक हैं जितनी तब थीं।